



सुनीता सोलंकी 'मीना'

बिचौलिया

एक जमाने में शादी ब्याह के रिश्ते में बिचौलिए की भूमिका भी बड़ी महत्वपूर्ण होती थी, आज भी सब शादियां तो लव मैरिज नहीं हैं तो कुछ केस में तो बिचौलिए बिना आज भी शादी ब्याह मुश्किल हो गये हैं।

नेट को बिचौलिए बनाना मुझे सिर्फ ऐसा लगता है कि जैसे गुगल से रास्ता पूछ रहे हो और जरा सी चूक होते ही राह भटक कहीं के कहीं कयी किलोमीटर धक्के खा वापिस आ रहे हों।

बिचौलिए की जरूरत इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जाती थी कि अगर कोई लड़के या लड़की वाले शादी कर रहे हैं बच्चों की तो डायरेक्ट बात करने में हिचक होती थी मगर यह कार्य बिचौलिए आसानी से कर लेते थे। और शादी करवा देते थे।

एक जमाना था शादी एक पवित्र रिश्ता माना जाता था। आज के संदर्भ में यह बात इतनी खरी नहीं रही।

शादी केवल सुंदरता या धन के आधार पर ही नहीं अपितु गुणों को ही आधार मानकर होती थी।

आज गुणों से भी पहले लड़के लड़की की रज़ामंदी बहुत जरूरी हो जाती, कई बार घर वालों का या बिचौलिए के दबाव में आकर लड़का और लड़की की शादी कर दी जाती है लेकिन बाद में वह शादी चलती नहीं है। शादी हो जाने के बाद रिश्ते को टुकराया जाना हमारे समाज में आज भी अपमान जनक माना जाता है।

वैवाहिक रिश्तों में पारदर्शिता का होना अतिआवश्यक है। अपनी कमियां पहले ही बोल कर बता देने में किसी प्रकार की कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। बिचौलिए की मु-जुबानी सुनकर आज के समाज का आइना कुछ अजीबोगरीब से रूप में सामने आया।